कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 04, (सितंबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 60–63

चूहों की पहचान, स्वभाव और प्रबंधन की रणनीतियाँ

डॉ. राजेश आर्वे[1], डॉ. एस. बी. सिंह[2],
डॉ. आर.पी. पटेल[2], एवं डॉ. पंकज मईड़ा[1]
सहायक प्राध्यापक[1], सह–प्राध्यापक[2]
के. एन. के. उद्यानिकी महाविद्यालय, मंदसौर
राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म.प्र.), भारत।
Email Id: – drrajeshaarwe@gmail.com

चूहे (कृंतक) छेनी जैसे दांतों वाले जानवर हैं। उनमें गंध, स्वाद और सुनने की क्षमता अत्यधिक विकसित होती है। वे सर्वाहारी हैं और घरों या खेतों में अनाज, सब्जियां, फल, मांस और अन्य उत्पाद खाते हैं। कृंतक फसलों और भंडारित अनाज को भारी नुकसान पहुंचाने के लिए जिम्मेदार हैं। इन उत्पादों को खाने के अलावा, वे अपने मल, मूत्र, शरीर के बाल आदि के साथ बिखरकर और संदूषण द्वारा एक बड़ी मात्रा को नष्ट कर देते हैं। चूहे प्रतिदिन अपने शरीर के वजन के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर भोजन खाते हैं। उपभोग की गई मात्रा से लगभग 20 गुना अधिक नुकसान पहुंचाते हैं। वे अकेले खाद्य उत्पादन में औसतन लगभग 5–20 प्रतिशत की हानि पहुंचाते हैं।

घरों में पाई जाने वाली प्रजातियाँ:

1. घरेलू काला चूहा (रैटस रैटस)

परिचय एवं पहचान: सम्पूर्ण भारतवर्ष में पाई जाने वाली यह एक सामान्य घरेलू चूहे की प्रजाति है जो कि प्लेग जैसी खतरनाक बीमारी फैलाने में सहायक होने के कारण सबसे खतरनाक और महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस प्रजाति का ऊपरी भाग भूरा–काला तथा पेट का

भाग मटमैला सफेद होता है। शरीर लम्बा और मुँह (दवनज) नुकीला होता है। इस प्रजाति के वयस्क चूहे के शरीर का भार 150–200 ग्राम तक होता है और पतली तथा गहरे रंग की पूँछ शरीर की लम्बाई से अधिक लम्बी होती है।

स्वभाव: इसकी विष्ठा घरों, गोदामों, भण्डारण पात्रों में बिखरी हुई मिलती है। यह प्रजाति ऊपर चढ़ने और दौड़ने में निपुण होती है। रात्रिचर यह प्रजाति दिन के समय कभी–कभी ही दिखाई पड़ती है। अनाज, फली, फल, सब्जियाँ, मछली इत्यादि को भोजन बनाने वाली यह प्रजाति भोजन की पर्याप्त उपलब्धता होने पर 10–15 मीटर की परिधि में ही रहती है। यह प्रजाति लकड़ी, प्लास्टिक और रबर की वस्तुओं को क्षतिग्रस्त करती है।

2. घरेलू चुहिया (मस मसकुलस)

परिचय एवं पहचान : यह प्रजाति मूषक समुदाय की आकार में सबसे छोटी सदस्य है। अपने छोटे आकार और हर प्रकार की परिस्थिति में रहने की क्षमता के कारण यह प्रजाति सफल है। खाती कम है परंतु नुकसान अधिक करती है। चुहिया का शरीर गहरे भूरे रंग का होता है जिस पर मुलायम बाल होते हैं। पेट का भाग हल्का

भूरा होता है। नुकीला मुँह तथा पूँछ शरीर की लम्बाई से अधिक लम्बी होती है। वयस्क चुहिया के शरीर का भार 23–35 ग्राम तक होता है।

स्वभाव: इसकी दुम बाल रहित और छल्लेदार होती है। यह प्रजाति वसा, प्रोटीन और शर्करायुक्त सभी प्रकार के खाद्यान्न और दाने खाना पसंद करती है। पानी की पूर्ति यह अपने भोजन से ही कर लेती है। सामान्यतः इसकी भोजन आवश्यकता मात्र 3 ग्राम प्रति दिन ही होती है परंतु कुतरने की आदत तथा प्रदूषण करने से यह खाद्यान्न को बर्बाद अधिक करते हैं। इनकी दृष्टि कमजोर होती है और रंग–अंधत्व भी पाया जाता है परंतु इनमें सूंघने, स्वाद लेने और स्पर्श की अद्भुत क्षमता होती है। घरों में यह 4–6 इंच की गोलाई के बिल बनाकर रहती हैं और इन्हें अपने आने–जाने के मार्गों का अच्छा ज्ञान होता है।

3. भूरा चूहा (रैटस नार्वेजिकस)

परिचय एवं पहचान : इसे नार्वे चूहा भी कहते हैं। इसका शरीर अपेक्षाकृत बड़ा तथा भूरे रंग के मुलायम बालों से ढँका होता है। पेट का भाग सफेद होता है। इसके कान छोटे और रोयेंदार, मुँह चौड़ा और चपटा तथा दुम शरीर की लम्बाई से कम होती है। शंकु के आकार की इसकी विष्ठा समूह में मिलती है। वयस्क चूहे के शरीर की लम्बाई 180–200 मि.मी. तथा भार 200–300 ग्राम तक होता है।

स्वभाव: बंदरगाहों में प्रायः खाद्यान्न गोदामों में पाया जाने वाला यह चूहा सीवर नालियों में रहना पसंद करता है। यह कुशल तैराक होता है। और 60 से.मी. तक छलाँग लगा सकता है।

खेत के चूहों की प्रजातियाँ :

4. भारतीय चूहा, बैंडिकोटा बेंगालेंसिस

परिचय एवं पहचान :यह अच्छे तैराक, मोटे कठोर फर से ढका होता है, ऊपर से भूरा–भूरा या काला और पेट पर भूरा–सफेद होता है। इसका चेहरा सुअर जैसा और छोटा सिर होता है। इसकी लंबाई 16–24 सेमी (पूंछ के बिना) होती है । पूँछ, अक्सर छोटी होती है लेकिन कभी–कभी शरीर जितनी लंबी होती है।

स्वभाव: यह क्रोध आने पर गुर्राने लगता है। यह पूरे वर्ष प्रजनन करता है । यह अपने बिल में बड़ी मात्रा में भोजन जमा कर लेता है। बिल भूमिगत और उथले होते हैं। एक बिल में 2–12 खुले स्थान (छेद) होते हैं सुरंग में 2–5 गलियाँ होती हैं जिनमें से कुछ अंधी होती हैं और अंत में भोजन–कक्ष होता हैं। इन कक्षों में खाद्य सामग्री को मिट्टी की गेंदों से सील कर दिया जाता है। प्रजनन कक्ष एक टेढ़ी मेंड़ी (जिग–जैग) गली के अंत में होता है, जिसमें घास और पुआल की परत होती है।

यह चूहा धान की पूरी बाली काट देता है लेकिन उसका केवल कुछ भाग ही खाता है। अन्य प्रजातियों की तरह, यह कटे हुए खेतों से नई बोई गई फसलों की ओर पलायन करता है।

5. नरम बालों वाला फील्ड चूहा, रैटस मेल्टाडा

परिचय एवं पहचान: यह चूहा बैंडिकोटा बंगालेंसिस से छोटा होता है और इसका फर नरम और गहरे भूरे–भूरे रंग का होता है। यह 10.0–15.6 सेमी लंबा और इसका वजन लगभग 64 ग्राम होता है। पूंछ शरीर के बाकी हिस्सों की तुलना में लंबाई में थोड़ी

E-ISSN: 2582-9769

छोटी होती है। यह मार्च और अगस्त में बच्चे पैदा करता है। एक बिल में 1–4 खुले स्थान होते हैं और उन्हें हमेशा खुला रखा जाता है, लेकिन छेद के सामने घास के कुछ टुकड़े रखे रहते हैं।

स्वभावः ये चूहे खेत के साथ–साथ मेड़ों पर भी साधारण बिल बना लेते हैं। गर्मियों में जब भोजन उपलब्ध नहीं होता है, तो वे घास या केकड़े और घोंघे खाते हैं। वे काफी अच्छे तैराक होते हैं। धान की बाली काटने और उसके अवशेषों के साथ मेड़ पर वापस तैरने की विशेष आदत होती है।

6. इंडियन गेरबिल, टेटेरा इंडिका

परिचय एवं पहचानः इसे मृग–चूहा के नाम से भी जाना जाता है और यह रेतीली मिट्टी में पाया जाता है। यह एक कमजोर तैराक, ऊपर से हल्का भूरा या लाल रंग का और पेट सफेद

रंग का होता है। यह 11. 6–20.3 सेमी लंबा और इसका वजन 115 ग्राम होता है। पूंछ शरीर से 20–30 प्रतिशत लंबी होती है और इसमें बाल होते हैं । पूँछ एक लटकन (गुच्छा) में समाप्त होती है।

स्वभावः यह बहुत संवेदनशील और तेज चलने वाला चूहा है और बस्तियों में रहता है। कैद (बन्द स्थिति) में, इसके दो प्रजनन मौसम होते हैंय

- मार्च के अंतिम सप्ताह से मई के मध्य तकय
- अगस्त के अंतिम सप्ताह से अक्टूबर के मध्य तक।

एक मादा 1–3 कूड़े (छोटे नवजात का गुच्छा) पैदा करती है, प्रत्येक में 3–8 बच्चे होते हैं। खेत में प्रति कूड़े में 5–10 बच्चे होते हैं।

भारतीय गर्बिल के बिल रेतीले इलाकों, फसल के खेतों या नदी तल के पास सूखी भूमि के टुकड़ों में होते हैं। बिल का छेद अक्सर कांटेदार झाड़ी या कुछ वनस्पति की आड़ में स्थित होता है, लेकिन बिखरी हुई ताजी खोदी गई मिट्टी इसका पता लगाने में मदद करती है। बिल, अधिक गहरे और लंबाई में छोटे होते हैं। सर्दियों में बीज खाता हैय गर्मियों में तनों, प्रकंदों और कीड़ों को, और मानसून में पौधों की पत्तियों और फूलों को खाता हैं।

चूहों (कृन्तकों) द्वारा क्षति

चूहे द्विबीजपत्री बीजों और अनाजों को अधिक पसंद करते हैं। गेहूं की फसल में सबसे ज्यादा नुकसान पकने की अवस्था में होता है। छोटी अवस्था (अंकुरण अवस्था) में मूंगफली की फसल को अधिक नुकसान होता है। लेकिन परिपक्व होने पर चूहे फलियाँ खोदकर गिरी (बीज) खा जाते हैं और खाली छिलके छोड़ जाते हैं। गन्ने को नुकसान अक्टूबर से शुरू होकर कटाई तक जारी रहता है। चूहे बीज खाने के लिए धान की नर्सरी को उखाड़ देते हैं और बाद में पौधों को भी काट देते हैं। परिपक्वता के बाद, फसल के क्षतिग्रस्त हिस्सों का आसानी से पता लगाया जा सकता है। चूहे अपनी गतिविधि बिल के चारों ओर 5–10 मीटर के दायरे तक ही सीमित रखते हैं।

चूहों को मनुष्यों और पशुओं में घातक बीमारियाँ फैलाने के लिए भी जाना जाता है। रैटस रैटस, बैंडिकोटा बेंगालेंसिस और टेटेरा इंडिका बुबोनिक प्लेग बीमारी फैलाते हैं। इसके अलावा, वे बिजली के तारों को कुतर देते हैं, फर्नीचर को खराब कर देते हैं, घरों के अंदर घुसकर छेद करते रहते हैं और फर्श और दीवारों को धंसा देते हैं।

प्रबंधन

निगरानीः निगरानी औपचारिक और नियमित रूप से आयोजित की जानी चाहिएय उपयोग की जाने वाली तकनीकों और चारा की परवाह किए बिना निरंतर निगरानी की जानी चाहिए।

E-ISSN: 2582-9769

कर्षण नियंत्रणः

1. खेत में 45 सेमी तक गहरी जुताई, और बिलों को हटाने से वैकल्पिक भोजन और आश्रय की उपलब्धता कम हो जाती है।

2. एक साथ रोपण करने से कृंतकों का कटाई वाले खेतों से बिना कटाई वाले खेतों में प्रवास रुक जाता है।

यांत्रिक नियंत्रणः

1. कृंतक–रोधी कंटेनरों और प्लास्टरिंग भंडारण संरचनाओं के माध्यम से चूहों के हमलों से बचाव करने से कृंतक संक्रमण को रोकने में मदद मिलती है।

2. कृंतक आबादी को कम करने के लिए फँसाना एक किफायती और प्रभावी तरीका है। फंसे हुए चूहों को तालाबों में पिंजरों में डुबाकर मार देना चाहिए।

रासायनिक नियंत्रणः

1. जहर का चारा (पॉइजन बैट्स) चारे में प्रयुक्त जहर दो प्रकार के होते हैं:

(ए) तीव्र जहर जो एक ही खुराक में उपयोग किए जाते हैं। उदाहरणः– जिंक फॉस्फाइड,

(बी) क्रोनिक जहर जो रक्त थक्कारोधी (एंटीकोएगुलेंट्स), यानी रक्त पतला करने वाली दवाएं के रूप में कार्य करते हैं और कई खुराक में उपयोग किए जाते हैं। उदाहरणः– वारफारिन, फ्यूमरिन, कई दिनों तक सेवन करने पर ये जहर घातक हो जाते हैं,क्योंकि ये बाहरी और आंतरिक रक्तस्राव का कारण बनते हैं।

अन्य थक्कारोधी कृंतनाशक (ब्रोमैडिओलेन) एक खुराक में घातक होते हैं लेकिन चूहे कई दिनों के जहर के बाद मर जाते हैं

- जिंक फॉस्फाइड (2% चारा) भारत में सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला कृंतकनाशक है। चारा जिंक फॉस्फाइड के 1 भाग को गेहूं, चना, मक्का, बाजरा या ज्वार के साबुत या टूटे हुए अनाज के 40 भागों के साथ वनस्पति तेल के साथ मिलाकर तैयार किया जाता है।
- खेत में बेहतर परिणाम के लिए, पहले सावधानीपूर्वक प्रीबेटिंग की जानी चाहिए, यानी बिना जहर वाले चारे के साथ गलत (झुठा) चारा 1–2 दिन के लिए डालना चाहिए। जिंक फॉस्फाइड का खेत में उपयोग करने से कृंतक आबादी में 70–80 प्रतिशत की कमी आती है।

बिलों का धूमन

1. एल्युमीनियम फास्फाइड की गोलियाँ 0.6 ग्राम की 2 गोलियाँ या 3 ग्राम की आधी गोली प्रति बिल) बहुत प्रभावी और सुरक्षित पाई गई हैं। एक गोली को जीवित बिल में डालने के बाद, छेद को मिट्टी से कसकर बंद कर दिया जाता है। रसायन मिट्टी की नमी के साथ प्रतिक्रिया करता है और घातक फॉस्फीन गैस उत्पन्न होती है।
2. क्लोरोपायरीफास 20 ई. सी. को एक लीटर पानी में 10 मिलीलीटर मिलाकर उस बिल में डालना चाहिए जिसमें चूहें मौजूद हो। उसके बाद बिलों का मुँह बंद कर देना चाहिए।
3. जिंक फास्फाइड 80.00ः पाउडर की 10 ग्राम मात्रा 10 ग्राम खाद्य तेल के साथ और फिर 380 ग्राम भोजन के साथ मिलाएं। उसके बाद 10 ग्राम का जहरीला चारा प्रत्येक बिल पर रखें।

चूहों को मारने के ये तरीके केवल तभी प्रभावी होते हैं जब इन्हें बड़े पैमाने पर किया जाता है, और बार–बार दोहराया जाता है। इसका उद्देश्य 90 प्रतिशत से अधिक आबादी को मारना होना चाहिए, अन्यथा वे इतनी तेजी से प्रजनन करते हैं कि कुछ ही महीनों में आबादी उसी स्तर पर पहुंच जाती है।